* सप्तम अध्याय *

# आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के उद्देश्य का तुलनात्मक अध्ययन।

## : सप्तम अध्याय :

# आँचलिक उपन्यास की दृष्टि से आलोच्य उपन्यासों के उद्देश्य का तुलनात्मक अध्ययन ।

हर कृति के पीछे लेखक का कोई- न- कोई उद्देश्य अवश्य होता है।

उपन्यास का उद्देश्य मनोरंजन होता है। परंतु इसके साथ उपन्यास मानव के जीवन संबंधी अनुभव को समृद्ध बनाता है।

## 7.1 आँचलिक उपन्यासों के उद्देश्य :-

आँचलिक उपन्यासकार एक सीमित क्षेत्र या विशिष्ठ अंचल के सामाजिक, सांस्कृतिक अध्ययन के आधार पर मानवमूल्यों की स्थापना करना चाहता है।

''आँचलिक उपन्यास का उद्देश्य स्थिर स्थान पर गतिमान समय में जीते हुए अंचल के व्यक्तित्व के समग्र पहलुओं को उद्‌घाटित करना है''[1]

इस प्रकार आँचलिक उपन्यास का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अंचल का समग्रता से चित्रण करना होता है।

आँचलिक उपन्यास में एक सीमित क्षेत्र या अंचल-विशेष की मानवीय समस्याओं तथा जीवन यथार्थ के अध्ययन विश्लेषण के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों तथा मानवीय मूल्यों को व्यापक मानवीय समस्याओं के आलोक में भी देखना,परखना पडता है और इस बात के लिए विशेष रूप से सचेत रहना पडता है कि जीवन संबंधी उनकी स्थापनाएं सार्वदेशिक, सार्वजनीत तथा मानवमात्र के लिए भी हों।

इस प्रकार आँचलिक उपन्यास का और एक उद्देश्य मानव की प्रगति और विकास की कामना और मानवी मूल्यों की स्थापना का संकल्प यह भी है। (मानवतावादी दृष्टि)

## 7.2 'मैला आँचल' उपन्यास का उद्देश्य :-

'मैला आँचल' उपन्यास में रेणुजी ने अनेक राजनीतिक पार्टियों के पाखंड, स्वार्थ एवं सामाजिक अशांति का वर्णन कर अंत में मानवतावाद को प्रश्रय दिया है।

इस कृति के पीछे लेखक का उद्देश्य बडा व्यापक है जिसका संबंध केवल मानवता से है। विज्ञान के वरदान से विध्वंसात्मक और निर्माणात्मक असीम शक्तियों से संपन्न आधुनिक मानव का प्रगति की इस अंध दौड में पड़कर सारे मानवीय मूल्यों से धीरे धीरे विछिन्न होते जाने के कारण मानवी जीवन अनेक समस्याओं से ग्रस्त हो गया है, जिसमें मानव हताश, विवश और दिशाहीन हुआ है।

डॉ. प्रशांत के चिंतन में मानवतावाद का जो व्यापक आशावादी स्वर मुखरित हुआ है वही इस कृति में लेखक का संदेश, उसका जीवन दर्शन और उपन्यास का उद्देश्य है।

बालदेव, कालीचरन, विश्वनाथप्रसाद, हरगौरीसिंह, बावनदास आदि पात्रों के द्वारा गांव की राजनीति को दर्शाया है। कालीचरन के द्वारा गांव में समाजवादी विचारधारा का तेजी से फैलाव हुआ परंतु उनके ही अन्य ऊपरी वर्ग के नेताओं की स्वार्थपरता और विश्वासघात के कारण उसका अकस्मात पतन हो जाता है। बालदेव के द्वारा गांधीवादी मार्ग का उत्कर्ष दिखाया है परंतु वह अपने ही आदर्शवाद का शिकार होकर समाप्त हो जाता है। सामंतवादी वर्ग में विश्वनाथप्रसाद है,उसमें सहानुभूति एवं दयाभाव है। उसमें स्थित उदारता के कारण ही उसने गांववालों के बुरे दिनों में सहाय्यता की थी। इन सद्गुणों के कारण ही वह सामंतवादी वर्ग का प्रतिनिधि होते हुए भी उसने लोगों के दिल में जगह बना ली है। हरगौरीसिंह के दल की जैसे थे स्थिति दिखायी है। उसका न तो अधिक विकास दिखाया है न पतन। वह खुद गावं के संथालों के आक्रमण का शिकार हो जाता है। गांव की यह राजनीतिक परिस्थिति है। इन पात्रों एवं उनकी कथाओं के माध्यम से उपन्यासकार का यह दिखाने का उद्देश्य है कि न तो केवल कोरा आदर्शवाद सफलता प्राप्त कर सकता है न राजनीतिक स्वार्थ एवं पाखंड। बालदेव की ईर्ष्या, बावनदास का बलिदान और कालीचरन के ऱ्हास से यह भी स्पष्ट किया गया है कि जिस समाज में राजनीतिक आग्रह प्रबल हो अनेक दलों, पक्षों का निर्माण हो जाता है वहाँ बलिदान, त्याग एवं सजगता के मार्ग से सफलता प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

उच्चवर्गीय तहसीदार विश्वनाथप्रसाद का जनता के प्रति दृष्टिकोण, उसकी तहसीदार के पद पर पुर्नप्रतिष्ठा, उसका हृदय परिवर्तन कराकर बेईमानी से हडपी गयी भूमि को गरीबों को लौटा देना, हरगौरीसिंह का

व्यक्तित्व एवं कृतित्व को तटस्थता से चित्रित करना, गांव के सबसे पाखंडी, दुराचारी और पापात्मा जोतखीजी को लकवा मार उसे उसके पापों की सजा दिलवाना आदि को चित्रित कर उपन्यासकार ने जातीय उच्चता के सिद्धांत, सामंतवादी विचारधारा तथा मानवतावाद की विजय को स्पष्ट किया है। इन प्रसंगों से यह स्पष्ट हो जाता है कि उपन्यासकार गांधीजी के आदर्शात्मक जीवनदर्शन से अत्यंत प्रभावित हैं।

लेखक का मानवतावादी स्वर सांप्रदायिकता के साथ भी जुडा है। इसे कालीचरन के माध्यम से व्यक्त किया है। वह गांव की फुलिया का चुभोना सहदेव के साथ कर देने की घोषणा करता है। साथ साथ वह धर्म में पाखंड एवं राजनीति का विरोध कर सेवादास को मठ का महंत बनवाता है। उसकी निजी जिंदगी में भी किसी सांप्रदायिक मान्यता के कोई मायने नहीं है। इस प्रकार उपन्यासकार की धार्मिक सहिष्णुता व्यक्त हुई है।

डॉ. प्रशांत के माध्यम से ग्रामों की सर्वांगीण उन्नति, उनके कायापालट के लिए शिक्षित वर्ग के सहयोग की आवश्यकता की ओर उपन्यासकार ने संकेत किया है। इस संकेत को प्रतिपादित करने के लिए उपन्यासकार ने डॉ. प्रशांत की मानसिकता और व्यक्तित्व को इस तरह गढा है कि उसके द्वारा मानवतावाद की स्थापना उसके कर्म और चिंतन की स्वाभाविक निष्पत्ति के रूप में हुई है।

डॉ. प्रशांत की सहपाठी ममता का स्थान उपन्यास में बहुत ही कम है फिर भी जब डॉ. प्रशांत उसे पत्र लिखकर अपने उद्देश्य को बयान करता है कि

''यहाँ की मिट्टी में बिखरे लाखों लाख इन्सानों की जिंदगी से सुनहरे सपनों को बटोरकर, अधूरे अरमानों को बटोरकर यहाँ के प्राणी के जीवकोषों में भर देने की मैंने कल्पना की थी। मैंने कल्पना कि थी, हजारों स्वस्थ हिमायल की कंदराओं में, त्रिवेणी के संगम पर, अरूण, तिमुर और सुराकोशी के संगम पर एक विशाल डैम बनाने के लिए पर्वत तोड परिश्रम कर रहें हैं ।---- लाखों एकड बंध्या धरती, कोशी-कवलित, मरी हुई, मिट्टी शस्य श्यामला हो उठेगी।''[2]

तब उसका यह दृष्टिकोण देख ममता उसके विचारों का स्वागत कर उसे प्रेरणा देती है। प्रशांत का समर्थन करने से ममता की मानवतावादी दृष्टि व्यक्त हुई है।

आज के इस भौतिकवादी युग में मानव के दिल के अंदर वास करनेवाला देवता (मानवता) आज की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिस्थितियों से दुःखी और संतप्त हो गया है। मानवीय गुणों की रक्षा

करनेवाली संजीवनी शक्ति समाप्त हो गयी है।

''खतों में फैली हुई काली मिट्टी की संजीवनी इन्हें जिलाए रहती है। शस्य श्यामला, सुजला सुफला ---- इनकी माँ नहीं। अब तो शायद धरती पर पैर रखने का भी अधिकार नहीं रहेगा। कानून बनने के पहले ही कानून को बेकार करने के तरीके गढ लिये जाते हैं। ----बेजमीन आदमी आदमी नहीं, वह तो जानवर है।''[3]

डॉ. प्रशांत 'आदमी का डॉक्टर है, जानवर का नहीं' लेकिन जब आदमी ही को जानवर बना दिया गया हो तब, 'मानव-देवता के पुजारी का पहला काम है, जानवर को इंसान बनाना।'

इसी महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए डॉ. प्रशांत के जीवन की सारी साधना समर्पित हो जाती है।

वह अपनी विदेशी छात्रवृत्ति त्यागकर ग्रामवासी हो जाता है। वह कहता है,

''मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी धरती पर प्यार के पौधे लहलहायेंगे। मैं साधना करूंगा ग्राम्यवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले ! कम से कम एक ही गांव के कुछ प्राणियों के मुरझाए ओठों पर मुस्कराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास को प्रतिष्ठित कर सकूँ।''[4]

इस प्रकार अपने इस महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा में समर्पित कर देता है।

डॉक्टर ने हमेशा मानवतावादी दृष्टि से उससे जुडे हर रिश्ते को परखने का प्रयास किया है। समाज के डर से बचपन में उसे त्याग चुके उसकी माँ की मुश्किलों को उसने समझने की कोशिश की है। इसी कारण वह किसी भी अभागिनी माँ की कहानी सुनते ही मन ही मन उसकी भक्ति करने लगता है, 'पतिता, निर्वासिता और सबसे नीच मां की गोद में क्षणभर को अपना सिर रखने को व्याकुल हो जाता है।'

कमली के प्यार में उसे स्वीकार करना पडा था कि,

''आदमी का दिल होता है, शरीर को चीर-फाडकर जिसे हम नहीं पा सकते। वह 'हार्ट' नहीं वह अगम-अगोचर

जैसी चीज है, जिसमें दर्द होता है, लेकिन जिसकी दवा ऐड्रिलिन नहीं। उस दर्द को मिटा दो, आदमी जानवर हो जायेगा ---दिल वह मंदिर है, जिसमें आदमी के अंदर का देवता निवास करता है।''[5]

इस प्रकार डॉ. प्रशांत तथा उससे जुडे हर प्रसंग से उपन्यासकार ने मानवतावादी विचारों को दर्शाया है। अनेक मुश्किलों से गुजरते हुए अंत में डॉ. प्रशांत और कमली का मिलन होकर वे सुखी हो जाते हैं। यह भौतिकता, राजनीति और प्रतिक्रियावाद पर मानवता और प्रेम की विजय है।

आज की वैज्ञानिक प्रगति कल्याणकारी होने में उपन्यासकार विश्वास नहीं करते। इस आधुनिक युग में सामान्य मानव के कल्याण का भरोसा नहीं है। चारों ओर अंधकार छा रहा है। हिंसा के जर्जर वातावरण में प्रकृति अस्वस्थता महसूस कर रही है। मानवता के लिए कहीं भी जगह नहीं है। लेकिन विधाता की सृष्टि में मानव ही सबसे बढकर शक्तिशाली है। जिसे पराजित करने की सामर्थ्य किसी वैज्ञानिक शक्ति में नहीं है। मिट्टी और मनुष्य की मुहब्बत किसी लेबोरटरी में नहीं बनती वह केवल गांव के सरल, पवित्र वातावरण में ही बन सकती है। इसी कारण डॉ. प्रशांत की तरह भारत के इन देहातों की ओर लौटो और प्यार की खेती करो। इन लोगों के दिल में विश्वास और आशा जगाने का प्रयास करो। उनकी सर्वांगीण प्रगति करने का प्रयास करो। सही मायने में मानवतावादी बनने का प्रयास करो। इसी में मानवता का विकास है।

## 7.3 आँचलिकता की दृष्टि से 'मैला आँचल' उपन्यास के उद्देश्य :-

### 7.3.1 अंचल का समग्र चित्रण :-

आँचलिक उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अंचल जीवन की विशिष्टता को स्पष्ट करते हुए अंचल का समग्रता से चित्रण करना। आँचलिक उपन्यास की दृष्टि यथार्थवादी होती है। जिसमें कभी कभी आदर्श की हल्की-सी झाई रह सकती है। रेणु ने इस उपन्यास को लिखते समय इसी प्रकार की दृष्टि को अपनाया है। उन्होंने कहा भी है,

''इसमें फूल भी हैं, शूल भी, धूल भी है, गुलाल भी, कीचड भी है,चंदन भी,सुंदरता भी है,कुरूपता भी - मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''[6]

आँचलिक उपन्यासकार समाज जीवन का चित्रण करने के लिए गांव या कस्बे को आधार बनाता है। आँचलिक उपन्यास की इस विशेषता की ओर रेणु ने उपन्यास की भूमिका में संकेत कर दिया है।

'मैला आँचल' उपन्यास में बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के मेरीगंज गांव को उपन्यास का कथाक्षेत्र चुना है। उपन्यास की संपूर्ण घटनाएं मेरीगंज गांव से ही जुडी हैं। उपन्यासकार ने राजकीय, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक वातावरण द्वारा मेरीगंज गांव के अंचल जीवन को चित्रित किया है।

'मेरीगंज' गांव की सामाजिक स्थिति में असामाजिकता के तत्व उभरते हुए दिखायी देते हैं। गांव के अनेक टोलियों में बट चुके विभिन्न वर्णों, विभिन्न वर्गों के लोगों में मेलजोल नहीं है। हर एक वर्ग अपने को श्रेष्ठ साबित करने पर तुला है। व्यक्तिगत चरित्र की दृष्टि से गाववासियों के वर्तन में अनैतिकता है। इनके साथ साथ इन लोगों के अलग अलग रीतिरिवाजों और परंपराओं का भी चित्रण हुआ है। गांव में त्योहारों, पर्वों, उत्सवों पर गाये जानेवाले गीतों, नृत्यों, पारंपारिक खेलों, प्रहसनोंद्वारा गांव के उल्हासमय वातावरण का चित्रण हुआ है।

सामाजिक वातावरण से प्राकृतिक वातावरण भी जुडा रहता है। अंचल के समग्र जीवन के चित्रण की प्रक्रिया में लेखक मानवीय गतिविधियों के साथ साथ प्रकृति के बहुआयामी चरित्र एकदूसरे की पारस्पारिकता में उद्‌घाटित करता है।

'मैला आँचल' में अत्यंत प्रभावी रूप में नहीं फिर भी वहाँ की भौगोलिकता को चित्रित करते हुए अनेक जगह प्रकृति वर्णन चित्रित हुआ है।

सामाजिक वातावरण में ही आर्थिक संदर्भ स्थान पाता है। मेरीगंज गांव की आर्थिक स्थिति विषमग्रस्त है। गांव में व्याप्त गरीबी के कारण हैं जनसंख्या में वृद्धि, बेकारी, भूमि का विषम विभाजन, धनिकोंद्वारा निम्न वर्ग के लोगों का शोषण जिन्हें लेखक ने बडी सजीवता के साथ चित्रित किया है। मेरीगंज की धार्मिक स्थिति विकाग्रस्त है। गांव की धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र मठ है। मठ के महंत और उनकी दासियों के पारस्पारिक संबंध, मठ में गाये जानेवाले गीत, संवाद, वहाँ के नियम, जीवनपद्धति के चित्रण से मठ का भ्रष्टरूप प्रदर्शित किया है। उपन्यास में अनेक जगह अंधविश्वासों का भी उल्लेख हुआ है तथा धार्मिक मान्यताओं को विशेष महत्त्व प्राप्त हुआ है। लेखक ने इन सबका विधान एक बाहरी रंगत के रूप में नहीं तो उस अंचल की तीव्र जीवन विसंगति के उद्‌घाटन के रूप में किया है। 'मेरीगंज' गांव के जीवन का धार्मिक आयाम धार्मिक और अमानवीय, घोषित त्याग और वास्तविक विलास के द्वंद्व से पीडित है।

रेणु के प्रत्येक उपन्यास में जिसप्रकार युगीन राजनैतिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है, उसी प्रकार 'मैला आँचल' में भी राष्ट्रीय धरातल पर उभर रही राजनीतिक मानसिकता को स्थान मिला है। संपूर्ण उपन्यास में

मेरीगंज की स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक परिस्थिति चित्रित हुई है। जो कभी मेरीगंज के लोगों को लाभदायक नहीं रही। अनेक राजनीतिक पक्ष, उनकी स्वार्थ नीति, दांव-पेच, पारस्परिक वैमनस्य, मूल्यतनाव के चित्रणद्वारा गांव का राजनीतिक वातावरण उद्‌घाटित हुआ है। वैसे तो यह मेरीगंज के लोगों को राजनैतिक समस्या ही बनी रही फिर भी कई जगह राजनैतिक चेतना के अच्छे परिणाम दिखायी देते हैं।

इस प्रकार उपन्यास में सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, धार्मिक वातावरण के द्वारा मेरीगंज गांवका समग्र चित्रण हुआ है।

### 7.3.2 मानवतावादी दृष्टि :-

आज तक के आँचलिक उपन्यास युग युग से उपेक्षित सामान्यजन,उन लोगों का अधिकार प्राप्ति के लिए किया गया संघर्ष चित्रित करते आये हैं। इस व्यथाकथा में कीचड भी है, कमल भी, धूल भी है, फूल भी, स्वार्थ भी है, उदारता भी, टूटन भी है, आस्था भी, लेकिन इन सबसे बडी दो चीजें हैं - मानव की जिजीविषा और जिगीषा। इसीलिए यह कहना अधिक सार्थक है कि आँचलिक उपन्यासों की सर्जनात्मक प्रेरणा के मूल में है मानव, मानव की प्रगति और विकास की कामना और मानवीमूल्यों की स्थापना का संकल्प।

आँचलिक उपन्यासकार को अपने जीवनदर्शन अथवा मानवीय समस्याओं के अध्ययन से प्राप्त अपने निष्कर्षों को सीधे व्यक्त न करते हुए उसे अपनी कृति की राह से गुजरते हुए स्वयं वहां तक पहुँचना पडता है और पाठकों को भी पहुँचाना पडता है।

'मैला आँचल' उपन्यास के पीछे लेखक का उद्देश्य बडा व्यापक और महान है, जिसे उन्होंने केवल उपदेशात्मक रूप में प्रदर्शित न करते हुए अपने उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र डॉ. प्रशांत की मानसिकता, उसका चिंतन, उसका व्यक्तित्व तथा उसके कार्य द्वारा प्रदर्शित किया है।

उपन्यास के उद्देश्य का संबंध मानव, संपूर्ण मानवता और व्यापक मानवीय समस्याओं से हैं। विज्ञान के वरदान से, विध्वंसात्मक और निर्माणात्मक शक्तियों के कारण आज का मानव प्रगति की इस अंधदौड में फँस गया है। जिससे संपूर्ण मानवीय मूल्यों का ऱ्हास होने से मानवता के सामने संकट आ पडा है। मानवीय जीवन समस्याओं से ग्रस्त हो गया है। जिसके कारण आज का मानव हताश और विवश हो गया है।

उपन्यास के प्रमुख पात्र प्रशांत के कार्य तथा चिंतनद्वारा लेखक का मानवतावाद का व्यापक

और आशावादी दृष्टिकोण प्रदर्शित हुआ है। आज के इस आधुनिक वैज्ञानिक युग ने आदमी को जानवर बना दिया है तब 'मानव देवता' के पुजारी का 'पहला काम है, जानवर को इंसान बनाना।' और डॉ. प्रशांत अपना संपूर्ण जीवन इस उद्देश्य की प्राप्ति में समर्पित करता है जिसके लिए वह अपनी विदेशी छात्रवृत्ति त्याग, अनेक प्रलोभनों से दूर रहकर हमेशा के लिए अंचलवासी हो जाता है। वह लेखक का मूल अभिप्रेत मनुष्य की असीम शक्ति में आस्था, उसका परंपरा में विश्वास, जिजीविषा की शाश्वतता का प्रतिपादन और व्यापक मानवीय मूल्यों की स्थापना को सार्थक बनाने की कोशिश में जुट जाता है। उपन्यासकार चाहते हैं, उनके उपन्यास के पात्र प्रशांत की तरह भारत के शिक्षित लोग भी अपने देहातों की ओर लौटकर उनका सर्वांगीण विकास करने के उद्देश्य में कार्यन्वित हो जाय।

इस प्रकार आँचलिक उपन्यासों के मानवतावादी दृष्टिकोण को इस उपन्यास में बडे समर्थरूप में उपन्यासकार ने प्रदर्शित किया है।

## 7.4 'पडघवली' उपन्यास का उद्देश्य :-

पडघवली उपन्यास में लेखक ने शहरों में बढते कारखानों, उद्योगों के कारण भारत के देहातों के नवसर्जनशील मनुष्यशक्ति का शहरों में हो रहा विलिनीकरण और उसके कारण देहातों का हो रहा ऱ्हास इसकी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए लेखक ने अपेक्षा की है कि भारत के ऱ्हास हो रहे इन देहातों की ओर लोग वापस लौटें और इन देहातों को फिर से संप्पन्न बनायें। इस उद्देश्य को लेकर उन्होंने उपन्यास की रचना की है। परंतु उपन्यास को विस्तारित करते करते उपन्यासकार इस उद्देश्य से थोडा हट गये हैं और उन्होंने पडघवली गांव के लोगोंद्वारा मानवी जीवन के अनेक पहलुओं, रिश्तों को उद्घाटित करने का प्रयास किया है, जिसमें वे बहुत ही सफल बने हैं।

उपन्यास की भूमिका स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है, 'पडघवली ही कादंबरी नव्हे, ते एक नष्ट होऊ घातलेल्या खेड्याचे शब्दचित्र आहे.

कारखाने आणि उद्योगधंदे यांचे केंद्रीकरण झाल्यामुळे खेड्यातील नवसर्जनशील मनुष्यशक्तीचे शहरात जे विलीनीकरण होत आहे, ते भयानक आणि विचारी माणसाला चिंतित करणारे आहे. 'पडघवली' या सर्व मरगळ आलेल्या खेड्यांची प्रतिनिधि आहे.''[7]

('पडघवली' यह एक उपन्यास नहीं है तो वह एक नष्ट हो रहे देहात का शब्दचित्र है।

कारखानों और उद्योगधंदो के केंद्रिकरण से देहातों के नवसर्जनशील मनुष्यशक्ति का शहरों में जो विलीनीकरण हो रहा है,वह भयानक और विचारशील व्यक्ति को चिंतित करनेवाला है। 'पडघवली' इन सब मुरझायें हुए देहातों का प्रतिनिधि है।)

उपन्यासकार ने अपने भारतभ्रमण में खुद इन देहातों की बदतर अवस्था देखी है। वे अत्यंत व्यथित हो गये हैं इसी कारण वे चाहते हैं कि भारत के नष्ट हो रहे ये देहात फिर से संप्पन्न हो जाय। इसीलिए वे पाठकों से याने भारतीय जनता से अपनी अपेक्षा व्यक्त करते हुए कहते हैं ,

''त्यांचे लक्ष आपल्या त्या जीर्णशीर्ण, कोसळू पाहणाऱ्या खेड्यातील घरकुलांकडे वळावे.''[8]

(उनका ध्यान अपने उन जीर्णशीर्ण, नष्ट हो रहे देहातों में स्थित घरों की ओर मुडे)

इसी उद्देश्य को उपन्यासकारने अपनी रचनाद्वारा प्रदर्शित करना चाहा है परंतु उपन्यास को विस्तारित करते करते वे इस उद्देश्य से थोडा हट गये हैं।

उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र है अंबू जो जीवनसंघर्ष का डटकर सामना करनेवाली, बाहर से परंपराओं में जकडी हुई परंतु अंदर से पूर्णत: मुक्त, जिद्दी, मेधावी और सुजान स्त्री है। इस स्त्री की जीवनकहानी चित्रित करते समय संपूर्ण पडघवली गांव का उपन्यास में चित्रण हुआ है। अंबू का संपूर्ण जीवन पडघवली को समर्पित है। वह पडघवली के हर व्यक्ति से जुडी है।

उपन्यास के हर व्यक्ति का एक स्वतंत्र अस्तित्व रहा है। हर व्यक्ति का संघर्ष उसकी समस्या, उसका दु:ख अलग है। कोई भी व्यक्ति समूह में बहकर नहीं चलता। वह स्वतंत्र है परंतु इतना भी स्वतंत्र नहीं कि समूह से अलग हो। हर एक का जीवन संघर्ष अलग होते हुए भी उसमें अतिवैयक्तिकता नहीं तो उसमें सार्वत्रिकता है। गांव के लोगों का जीवन एकदूसरे से जुडा है। इस सबसे ही लेखक ने मानवी जीवन के अनेक पहलुओं का दर्शन कराया है। जिनसे उन लोगों का जीवन संघर्ष पाठकों को अपने से जुडा लगता है। संपूर्ण गांव के लोगों की जडे उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू और उसके घर से जुडी हैं। अंबू इन सब लोगों को समर्थ साथ देते देते खुद भी डटकर खडी रहती है। इन सबके बीच पाठकों के मन में गांव और गाववासियों का जीवन बडे प्रभावी रूप से प्रतिबिंबित होता है। मानव जीवन से जुडे अनेक प्रश्न खडे हो जाते हैं और इन सवालों के सामने मुंबई के

आकर्षण से गावों का हो रहा ऱ्हास यह प्रश्न दुय्यम स्थान पाता है।

मानवी जीवन से जुडे अनेक सवाल सामने आते हैं। जैसे कि मानवी रिश्तों में कैसे और क्यों उतारचढाव होते हैं ? आदमी किस प्रसंग में अपनी जिद पर अडा रहता है ? दु:ख और मृत्यु के कैसे विलक्षण प्रकार होते हैं ? स्त्री का सामर्थ्य निश्चित किस रूप में होता है ? सहन करने में या विद्रोह करने में ? या फिर दोनों में ? खास करके आदमी और उसके आसपास का परिवेश इन दोनों के बीच कैसे संबंध होते हैं ? मनुष्य किसी पराई बात को कैसे अपनाता है ? उसे परायापन कब महसूस होता है ? आदमी को फिर से अपनी जडों की ओर पलट जाने के लिए कौन और कब पुकारता है? आदमी कोई ठोस निर्णय कैसे और किस प्रसंग में लेता है ?

ऐसे अनेक सवालों में से हर एक सवाल का उत्तर मिलता ही है ऐसा नहीं है। अनेक सवाल अनुत्तरित रह जाते हैं। परंतु उन सवालों के उत्तर ढूंढ निकालने के लिए उपन्यासकार पाठकों को मजबूर करता है। इससे मानवी जीवन के अनेक पहलू, रिश्तों की गहराई, मानव की सामर्थ्य आदि अनेक बाते उद्‌घाटित हो जाती हैं। यही उपन्यासकार का उद्देश्य है जिसमें उन्हें बहुत सफलता मिली है।

उपन्यास के अंत में उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू अनेक मानसिक आंदोलनों के बीच से गुजरती हुई हमेशा के लिए पडघवली में रहने का ठोस निर्णय लेती है। उसे अन्य गांववालों की तरह मुंबई आकर्षित नहीं कर सकती। अपने अंतिम सांस तक उध्वस्त हुए अपने गांव में रहने का निर्णय लेती है। केवल एक आशा के साथ कि फिर से उसका गांव संप्पन्न, सुखी हो जाय।

याने उपन्यासकार यह आशा करते हैं कि शहरों की ओर भाग रहे लोग फिर से अपने उध्वस्त हो गयें गावों की ओर लौटें और अपनी मेहनत से उन्हें खडा करें। संप्पन्न, सुखी बनायें। उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू की तरह किसी भी प्रलोभनों के बली न होकर अपनी सच्ची कर्मभूमि को समझे और उससे हमेशा के लिए जुडे रहें। इसी में अपने देश की उन्नती है।

## 7.5 'पडघवली' उपन्यास के उद्देश्य :- (आँचलिकता की दृष्टि से)

### 7.5.1 अंचल का समग्र चित्रण :-

आँचलिक उपन्यासों का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है अंचल जीवन का समग्रता से चित्रण करना।

'पडघवली' उपन्यास में महाराष्ट्र के ~~उत्तर कोंकण~~ का पडघवली गांव कथाक्षेत्र चुना है। संपूर्ण उपन्यास की घटनाएँ पडघवली इस सीमित क्षेत्र से जुडी हैं। उपन्यासकार ने सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक वातावरण द्वारा पडघवली गांव का समग्र चित्रण किया है।

पडघवली गांव की सामाजिक स्थिति में अनेक जगह असामाजिकता के तत्व उभरते हुए दिखायी देते हैं। गांव के लोग ब्राह्मण और कुलवाडी इन महत्त्वपूर्ण दो जातियों में बँट चुके हैं। इनके साथ अन्य भी निम्न जाति के लोग हैं। इन लोगों में आपस में मेलजोल तो है परंतु अपने स्वार्थ की बात आने पर वे नैतिकता छोड स्वार्थी बन जाते हैं। जिससे कई बार इनमें झगडे होते रहते हैं। गांव के बहुत से लोगों के व्यक्तिगत चरित्र में अनैतिकता दिखायी देती है। इन बातों के साथ साथ यहाँ के लोगों के अलग अलग रीतिरिवाजों और परंपराओं का भी चित्रण हुआ है। गांव में त्योहारों, पर्वों, उत्सवों पर गायें जानेवाले गीतों, नृत्यों, धार्मिक कीर्तनों, पारंपारिक खेलों, प्रहसनों द्वारा गांव के उल्हासमय वातावरण का चित्रण हुआ है।

सामाजिक वातावरण से प्राकृतिक वातावरण भी जुडा रहता है। अंचल के समग्र जीवन के चित्रण की प्रकिया में लेखक मानवीय गतिविधियों के साथ साथ प्रकृति के बहुआयामी चित्र एकदूसरे की पारस्पारिकता में उद्घाटित करता है।

'पडघवली' में अत्यंत प्रभावी रूप में नहीं फिर भी वहाँ की भौगोलिकता के साथ साथ अनेक जगह प्रकृति वर्णन चित्रित हुआ है।

सामाजिक वातावरण में ही आर्थिक संदर्भ स्थान पाता है। पडघवली उपन्यास की प्रदीर्घ कालखंडवाली कथावस्तु तीन हिस्सों में विभाजित है। प्रथम कालखंड में चित्रित गांव की आर्थिक स्थिति अत्यंत संप्पन्न है। परंतु द्वितीय और तृतीय हिस्सा धीरे धीरे ऱ्हास हो रहे पडघवली का है। इन दिनों में पडघवली गांव की आर्थिक स्थिति अत्यंत विषम है। जिसके कारण यहाँ लोग अपने उदरनिर्वाह के लिए गांव छोडकर मुंबई की ओर भाग रहे हैं।

गांव की धार्मिक स्थिति परंपराओं में जकडी हुई है। गांव के रक्षणकर्ता गिऱ्होबा पर संपूर्ण गांव की नितांत श्रद्धा है तथा गिऱ्होबा ने सपने में आकर दिये हुए दृष्टांत का पालन करना वे अपना प्रथम कर्तव्य मानते हैं। इसके साथ अनेक अंधविश्वासों, धार्मिक परंपराओं, व्रतों, पूजाओं में उनका विश्वास है।

लेखक ने अंचल जीवन के इस धार्मिक आयाम को एक बाहरी रंगत के रूप में नहीं तो इस अचंल की विशिष्टता के उद्‌घाटन के रूप में चित्रित किया है।

इस प्रकार उपन्यास में पडघवली अंचल का वहाँ के सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक वातावरण द्वारा समग्र चित्रण हुआ है।

### 7.5.2 मानवतावादी दृष्टि :- ('पडघवली')

आँचलिक उपन्यासों की सर्जनात्मक प्रेरणा के मूल में मानव, मानव की प्रगति और विकास की कामना और मानवी मूल्यों की स्थापना का संकल्प होता है।

ऐसे उपन्यासों में चिरंतन मानव संवेदना के संप्रेषण की सिद्धि होती है।

'पडघवली' उपन्यास के पीछे लेखक का उद्देश्य बडा व्यापक है, जिसे उन्होंने केवल उपदेशात्मक रूप में प्रदर्शित न करते हुए अपने उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू की मानसिकता, उसका चिंतन तथा उसके कार्यद्वारा प्रदर्शित किया है।

उपन्यास के उद्देश्य का संबंध मानव से है। आज के इस यांत्रिक युग में शहरों में बढते कारखानों और उद्योगधंदों के कारण भारत के देहातों की नवसर्जनशील मनुष्यशक्ति शहरों में विलीन हो रही है। जिससे भारत के देहातों का ऱ्हास हो रहा है। इसकी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उपन्यासकार अपने उपन्यास के पात्र अंबूद्वारा अपना मानवतावादी दृष्टिकोन प्रदर्शित करते हैं।

गांव के बहुतसे लोग मुंबई के आकर्षण से अपने उदरनिर्वाह के लिए मुंबई भाग जाते हैं और उनके पीछे संपूर्ण गांव उध्वस्त हो जाता है। गिने चुने वृद्ध लोगों को छोड संपूर्ण गांव रिक्त हो जाता है। लेकिन उस वक्त भी अंबू अपने गावं का साथ नहीं छोडती। अनेक बार उसके मन में द्वंद्व हो जाता है। फिर भी मुंबई उसे आकर्षित नहीं कर सकती। वह अपनी अंतिम सांस तक अपने उध्वस्त हुए गांव में रहने का निर्णय लेती है।केवल एक आशा के साथ की गांव को छोड चुके लोग फिर से अपने गांव की ओर लौटें और अपनी मेहनत से उसे खडा करें, संप्पन्न बनायें।

इस तरह उपन्यासकार अपने उपन्यास की पात्र अंबू के द्वारा अपने मानवतावादी विचारों को

प्रदर्शित करते हुए यह उम्मीद रखते हैं कि भारत के शहरों की ओर आकर्षित हुए लोग फिर से अपने देहातों की ओर लौटें, मानव का सर्वांगीण विकास करने में कार्यन्वित हों देहातों को प्रगतिपथ पर लाने की कोशिश में जुट जायें।

इस उद्देश्य के साथ साथ उपन्यासकार का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है उपन्यासद्वारा मानवी जीवन का दर्शन कराना। इनमें उन्होंने मानवी जीवन के अनेक पहलू, रिश्तों की गहराई, मानव की सामर्थ्य आदि अनेक बातों का उद्‌घाटन किया है। इस प्रयत्न में उन्हें बहुत ही सफलता मिली है। उनके इस प्रयत्न में मानवी जीवन से जुडे अनेक सवाल खडे हो जाते हैं और उनके जवाब ढूंढ निकालने के लिए पाठक मजबूर हो जाते हैं।

**निष्कर्ष :-**

आँचलिक उपन्यास का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अंचल का समग्रता से चित्रण करना होता है।

'मैला आँचल' उपन्यास में मेरीगंज गांव के सामाजिक, प्राकृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजकीय वातावरण के उद्‌घाटन द्वारा उस अंचल का समग्र चित्रण हुआ है।

'पडघवली' उपन्यास में पडघवली गांव के सामाजिक, प्राकृतिक, धार्मिक, आर्थिक वातावरण के उद्‌घाटनद्वारा अंचल का समग्र चित्रण हुआ है।

अंचल जीवन के समग्र चित्रण के साथ साथ आँचलिक उपन्यास का और एक उद्देश्य मानवतावादी दृष्टि भी होता है।

'मैला आँचल' कृति के पीछे लेखक का उद्देश्य बडा व्यापक है, जिसका संबंध केवल मानवता से है। विज्ञान के वरदान से विध्वंसात्मक और निर्माणात्मक असीम शक्तियों से संप्पन्न आधुनिक मानव का प्रगति की इस अंध-दौड में पडकर सारे मानवीय मूल्यों का ऱ्हास हो मानवी जीवन समस्याओं से ग्रस्त हो गया है। मानव हताश और विवश हो गया है। आज के इस भौतिकवादी युग में मानव के दिल के अंदर वास करनेवाला देवता (मानवता) नष्ट हो गया है। आदमी जानवर बन गया है। तब सबसे महत्त्वपूर्ण काम है,जानवर को फिर से इन्सान बनाना। इस महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र डॉ. प्रशांत अपनी विदेशी छात्रवृत्ति त्याग अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर देता है। सब प्रलोभनों को त्याग हमेशा के लिए अंचलवासी हो जाता है।

इस प्रकार उपन्यासकार ने उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र डॉ. प्रशांतद्वारा मानवातावद का व्यापक और आशावादी स्वर मुखरित किया है।

'पडघवली' उपन्यास का उद्देश्य भी व्यापक है। शहरों में बढते कारखानों और उद्योगधंदों के कारण भारत के देहातों के नवसर्जनशील मनुष्यशक्ति का शहरों में हो रहा विलिनीकरण और उसके कारण देहातों का हो रहा ऱ्हास इसकी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए देहातों के पुर्ननिर्माण की आवश्यकता पर जोर दिया है। इसके साथ मानवी जीवन अनेक पहलुओं का उद्घाटन करते हुए उससे जुडे अनेक सवालों के उत्तर ढूंढने तथा उन पर विचार करने के लिए पाठकों को मजबूर किया है। इसमें उन्हें बहुत ही सफलता मिली है।

उपन्यासकार ने उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू का व्यक्तित्व, उसके चिंतन, मानसिकता तथा उसके कार्यद्वारा अपने उद्देश्य को प्रदर्शित किया है।

'मैला आँचल' उपन्यास में डॉ. प्रशांत अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर हमेशा के लिए अंचलवासी हो जाता है। उसे ग्रामवासिनी भारत के अंचलों पर प्यार की खेती करनी है। वहाँ के लोगों के मुरझाएँ होठोंपर मुस्कराहट लानी है। भारत के अंचलों का सर्वांगीण विकास कर उन्हें प्रगतिपथ पर लाना है। इसी प्रकार उपन्यासकार यह इच्छा व्यक्त करते हैं कि उपन्यास के डॉ. प्रशांत की तरह भारत के शिक्षित लोग देहातों की ओर आयें और देहातों के विकास के कार्य में जुट जायें। उसी में मानवता का विकास और देश की उन्नती है।

'पडघवली' उपन्यास में पडघवली गांव की युवा शक्ति शहर के आकर्षण से मुंबई भाग जाती है और संपूर्ण गांव उध्वस्त हो जाता है। उपन्यास की महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू को भी अपने उध्वस्त हुए गांव में रहना असंभव लगता है। उसके मन में अनेक बार द्वंद्व भी हो जाता है परंतु फिर भी मुंबई उसे आकर्षित नहीं कर सकती। वह अपनी अंतिम सांस तक पडघवली में रहने का निर्णय लेती है। एक आशा के साथ कि उसका उध्वस्त गांव फिर से खडा हो जाय,संप्पन्न हो जाय । उपन्यासकार पाठकों से यह कहना चाहते हैं कि उपन्यास के पात्र अंबू की तरह लोग अपने उध्वस्त हुए देहातों का साथ न छोडे। शहरों की ओर भागे लोग फिर से अपने गांवों की ओर लौटें। उध्वस्त हुए अपने गांवों को फिर से खडा करें। अपनी मेहनत से उनका सर्वांगीण विकास करें। इसी में मानवता का विकास और देश की उन्नती है।

T

**विशेष :-**

'मैला आँचल' उपन्यास के उद्देश्य का संबंध मानव, मानव की प्रगति और विकास की कामना और मानवी मूल्यों की स्थापना का संकल्प आदि से है।

डॉ. प्रशांत अपनी विदेशी छात्रवृत्ति त्यागकर मानवता की सेवा के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर देता है।

'पडघवली' उपन्यास का उद्देश्य भी मानव के विकास की कामना करता है। परंतु उपन्यास में मानव जीवन के अनेक पहलुओं का उद्‌घाटन करना उपन्यासकार का मुख्य उद्दिष्ट है। जिससे उपन्यासकार ने मानवी जीवन के अनेक पहलू, रिश्तों की गहराई, मानव की सामर्थ्य आदि बातों का उद्‌घाटन करने का प्रयास किया है। इस प्रयास में उन्हें बहुत ही सफलता मिली है। इस उद्देश्य के सामने शहरों में हो रहा देहातों के नवसर्जनशील मनुष्य शक्ति का विलिनीकरण और उससे देहातों का हो रहा ऱ्हास यह बात दुय्यम स्थान पाती है। इस प्रकार यहाँ मानव का सर्वांगीण विकास तथा उसकी प्रगति यह बात दुय्यम स्थान पर है।

## : संदर्भ-सूची :


| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | डॉ. जवाहर सिंह - | 'हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्पविधी', | पृष्ठ. 264 |
| | उध्रुत डॉ. रामदरश मिश्र | 'हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा', | |
| 2. | फणीश्वरनाथ 'रेणु' - | 'मैला आँचल', | पृष्ठ. 175 |
| 3. | फणीश्वरनाथ 'रेणु' - | 'मैला आँचल', | पृष्ठ. 174-175 |
| 4. | फणीश्वरनाथ 'रेणु' - | 'मैला आँचल', | पृष्ठ. 312 |
| 5. | फणीश्वरनाथ 'रेणु' - | 'मैला आँचल', | पृष्ठ. 137 |
| 6. | फणीश्वरनाथ 'रेणु' - | 'मैला आँचल', | प्राक्कथन से |
| 7. | गो. नी. दांडेकर - | 'पडघवली', | प्राक्कथन से |
| 8. | गो. नी. दांडेकर - | 'पडघवली', | प्राक्कथन से |

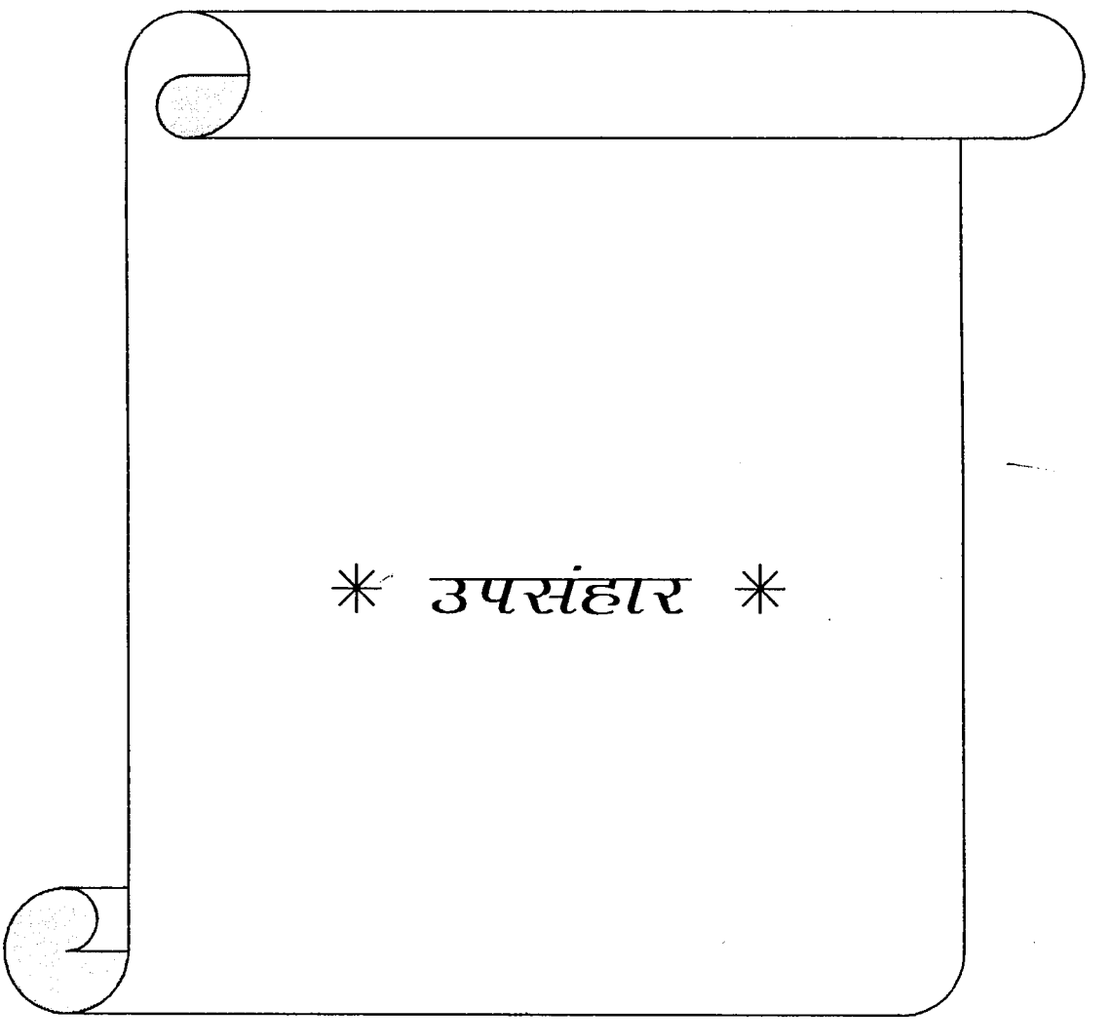

# * उपसंहार *

# उपसंहार

**प्रस्तावना :-**

हिंदी और मराठी साहित्य में आँचलिक प्रवृत्ति के लक्षण 19 वे शतक के प्रारंभ से ही देखे जाते हैं परंतु आँचलिकता का सही स्वरुप तथा विकास स्वातंत्र्योत्तर काल से ही हुआ है।

हिंदी आँचलिक उपन्यासों के उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं अमृतलाल नागर, देवेंद्र सत्यार्थी, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ 'रेणु' तथा मराठी आँचलिक उपन्यासों के उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं र. वा. दिघे, श्री. ना. पेंडसे, व्यंकटेश माडगूळकर, गो. नी. दांडेकर आदि।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' और गो. नी. दांडेकर के उपन्यासों का अध्ययन करते समय मैने उसे सात अध्यायों में विभाजित किया है। इस उपसंहार में मैं हर अध्याय का सार संक्षेप में देकर अनुसंधान की प्रमुख उपलब्धियाँ रेखांकित करुंगी तथा अनुसंधान की नयी दिशाएँ स्पष्ट करुंगी।

प्रथम अध्याय में हिंदी और मराठी आँचलिक उपन्यास साहित्य का सामान्य परिचय दिया है।

आँचलिक उपन्यास हिंदी और मराठी साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर काल में विकसित हुई एक नवीन प्रवृत्ति है।

हिंदी साहित्य में आँचलिक उपन्यास परंपरा की प्रथम मानी जानेवाली कृति 1925 में लिखित शिवपूजन सहाय की 'देहाती दुनिया' है। मराठी साहित्य में आँचलिक प्रवृत्ति से स्पर्शित पहला मराठी उपन्यास 1903 में प्रकाशित तथा धर्नुधारी लिखित 'पिराजी पाटील' है। परंतु र. वा. दिघे का 'पाणकळा' पूर्णत: आँचलिकता का निर्वाह करता है।

हिंदी साहित्य में आँचलिक उपन्यास के इतिहास में पूर्णरूप से प्रथम आँचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' हैं, इनका 1954 में लिखित 'मैला आँचल' उपन्यास पूर्णत: आँचलिकता का निर्वाह करता है। मराठी साहित्य में आँचलिक उपन्यास के जन्मदाता माने जानेवाले श्री. ना. पेंडसे से आँचलिकता अपनी संपूर्ण विशेषताओं के साथ प्रकट होती है। 1947 में प्रकाशित 'एलगार' उनका प्रथम आँचलिक उपन्यास है।

आँचलिक उपन्यासों में एक विशिष्ट प्रदेश को कथाक्षेत्र बनाये जाने के कारण वहाँ की भौगोलिक विशेषता, उस क्षेत्र की संस्कृति, संस्कृति से प्रभावित वहाँ का समाजजीवन, वहाँ की विशिष्ट भाषा आदि विशेषताओं के साथ उस अंचल के समाज जीवन का विविध रूपात्मक चित्र, वहाँ का राजनीतिक वातावरण, अर्थव्यवस्था आदि का चित्रण करना आँचलिक उपन्यासों की विशेषताएँ हैं तथा इन आँचलिक उपन्यासकारों ने अंचल जीवन का अत्यंत यथार्थ और संवेदनशील चित्रण अपने साहित्य में किया है।

आँचलिकता का प्रारंभ मराठी साहित्य में 19 वी सदी के प्रारंभ में हुआ जब कि हिंदी उपन्यास साहित्य में मराठी उपन्यास साहित्य के 22 साल बाद हुआ। महाराष्ट्र के तात्कालीन समाज सुधारकों जैसे महर्षि धोंडो केशव कर्वे, कर्मवीर भाऊराव पाटील, महात्मा जोतिबा फुले आदि ने शैक्षणिक प्रसार को अधिक महत्त्व देते हुए महाराष्ट्र के देहातों तक शैक्षणिक प्रसार किया। जिसके कारण महाराष्ट्र के अंचल शैक्षणिक स्तर पर ऊँचे उठे तथा यहाँ के शिक्षित लोगों ने अपने साहित्य लेखनद्वारा अपने परिवेश तथा अनुभूतियों को अभिव्यक्त करना चाहा। जिससे यह प्रवृत्ति प्रवाहित हुई और बाद में अंचल से जुडे लेखकों के योगदान से इस प्रवृत्ति का विकास हुआ। इसके विपरीत हिंदी क्षेत्र के देहातों तक शैक्षणिक प्रसार न होने से शिक्षित लोगों के अभाव में आँचलिक क्षेत्र की अभिव्यक्ति के लिए मराठी साहित्य की तुलना में हिंदी साहित्य को अधिक समय लगा।

द्वितीय अध्याय पांचवे दशक से अपना लेखन कार्य शुरू कर हिंदी उपन्यास साहित्य में आँचलिकता की सही मायने में नई दिशा प्रदर्शित करनेवाले प्रथम उपन्यासकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' और उन्हीं की तरह पांचवे दशक से अपना लेखन कार्य शुरू कर मराठी साहित्य में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखनेवाले गो. नी. दांडेकर के व्यक्तित्व और कृतित्व संबंधी है।

साहित्यकार की रचनाओं को परखने के लिए उसके व्यक्तित्व को जानना भी आवश्यक होता है। व्यक्तित्व को जानने के लिए उसकी व्यक्तिगत जीवनानुभूतियों को देखना और परखना आवश्यक होता है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु ' और दांडेकर के जीवन का बहुत सा काल अंचल से जुडा रहा जिससे उन्होंने अंचल जीवन को बहुत नजदीक से देखा तथा अनुभूत किया। इसी कारण उनके उपन्यासों में अंचल जीवन का अत्यंत यथार्थ, सूक्ष्म और संवेदनशील चित्रण हुआ है।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' और दांडेकर अत्यंत स्वच्छंद प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। अपने स्वच्छंद जीवन से उन्होंने मानव जीवन के अनेक पहलुओं को अनुभूत कर उसे अपने साहित्यद्वारा अभिव्यक्त किया।

फणीश्वरनाथ रेणु अपनी नौकरी के दौरान अनेक महानगरों से संबंधित रहें तथा उन्होंने महानगरीय जीवन, समस्याओं को देखा तथा उसे अनुभव किया और उसे ही अपने साहित्य में चित्रित किया है।

दांडेकर जी को भ्रमण में विशेष रूचि थी। जीवन के 73 सालों तक वे भ्रमण करते रहें। इस भ्रमण काल में आये हुए विपुल जीवनानुभवों घटनाओं को उन्होंने अपने साहित्य में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया और इस प्रयास में उन्हें बहुत हद तक सफलता प्राप्त हुई।

रेणु भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और नेपाली स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहें। इन दिनों उन्होंने सामान्यजनों पर होनेवाले अन्याय को नजदीक से देखा। इसी कारण उनके साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम की घटनाएँ, देशप्रेम तथा सामान्यजनों पर होनेवाले अन्याय के विरूद्ध उनकी कलम उठी है।

छत्रपति शिवाजी महाराज दांडेकर के आराध्य दैवत थे। अपने श्रद्धेय के महान कार्य से प्रभावित हो अपनी संपूर्ण जिंदगी में अनेक बार शिवाजी के किलों का भ्रमण किया तथा छत्रपति शिवाजी महाराज की महत्ता उद्घाटित करनेवाले अनेक ऐतिहासिक उपन्यासों का निर्माण किया।

इस प्रकार रेणु और दांडेकर के साहित्यद्वारा उनका देशप्रेम व्यक्त हुआ है। दोनों में अंतर सिर्फ इस बात का है कि रेणु स्वतंत्रता आंदोलनों में सक्रिय रहें और दांडेकर प्रत्यक्ष आंदोलनों में सक्रिय न रहते हुए भी अपने कार्य तथा लेखनद्वारा देशभक्त सिद्ध हुए हैं।

इस प्रकार दोनों उपन्यासकारों का व्यक्तित्व उनके कृतित्व में चित्रित हुआ है।

तृतीय अध्याय में 'मैला आँचल' और 'पडघवली' इन दो उपन्यासों की कथावस्तुएं संक्षेप में दी हैं। इसके बाद आँचलिक कथावस्तु के कथागत बिखराव, विशेष क्षेत्र, कथा की योजना, यथार्थ चित्रण, कल्पना का स्थान, प्रेमतत्व, आँचलिक जीवन की समस्याएँ तथा समाहार की विशिष्टता आदि तत्त्वोंनुसार दोनों उपन्यासों की कथावस्तुओं का विवेचन किया है।

आँचलिक उपन्यासों में अंचलजीवन का समग्रचित्रण किये जाने के कारण ऐसे उपन्यासों में कथागत बिखराव होता है।

'मैला आँचल' और 'पडघवली' दोनों उपन्यासों में कथा का प्रतिनिधित्व करनेवाले हर पात्र से

जुडी अलग कथा का निर्माण हो एकसाथ चलनेवाली अनेक कथाओं के संमिश्रण से एक पूर्ण कथावस्तु का निर्माण हुआ है। इसी कारण दोनों उपन्यासों में कथागत बिखराव होकर केंद्रीय कथा का अभाव है।

आँचलिक कथावस्तु किसी एक ही क्षेत्रविशेष से संबंधित होने के कारण ऐसे उपन्यासों में वहाँ के यथार्थजीवन का चित्रण होता है।

'मैला आँचल' उपन्यास मेरीगंज और 'पडघवली' उपन्यास पडघवली गांव से ही संबंधित रहा है। 'मैला आँचल' उपन्यास में स्थित मेरीगंज गांव के जिस सामाजिक अशांति का चित्रण किया है वह उस समय के देशव्यापी स्वतंत्रता आंदोलन से आयी वास्तविकता थी। इसके साथ उपन्यास में चित्रित सामाजिक जागृति, देशप्रेम, प्रगतिवादी विचार, परकीय वस्त्रोंपर बहिष्कार तथा स्वतंत्रता आंदोलन उस काल के सामाजिक जागृति, आर्थिक समस्या तथा राजकीय उथलपुथल का प्रतिबिंब है।

पडघवली गांव में आर्थिक समस्या के कारण गांव के लोग अपने उदरनिर्वाह के लिए मुंबई जा रहें हैं और उनके पीछे गांव उजाड हो रहा है। यह समस्या या उससे संबंधित सामाजिक जीवन चित्रित है। परंतु वास्तव में देखा जाय तो यह सारे कोंकण क्षेत्र के देहातों की वास्तविकता है और इसी यथार्थ पर उपन्यास निर्माण हुआ है।

आँचलिक उपन्यासों में कल्पना तथा यथार्थ को भावना की पृष्ठभूमि पर चित्रित किया जाता है। इसमें प्रेमतत्व, लोककथाएँ, लोकगीत, तिजत्योहार, समारोह आदि का समावेश होता है। वैसे ही इन दोनों उपन्यासों में अपने अपने क्षेत्रविशेष से संबंधित लोककथाएं, लोकगीत, त्योहार, समारंभ, उत्सव आदि का चित्रण हुआ है। परंतु 'पडघवली' में प्रेमतत्व को स्थान नहीं मिला है, जबकि, 'मैला आँचल' में इसके अनेक उदाहरण मिलते हैं। इसी प्रकार 'मैला आँचल' उपन्यास में मेरीगंज की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक समस्या के साथ राजनीतिक समस्या को महत्त्व मिला है। परंतु 'पडघवली' उपन्यास में उपर्युक्त समस्याओं में से राजनीतिक समस्या का कोई स्थान नहीं है।

'मैला आँचल' उपन्यास के अंत में सभी समस्याओं का योग्य रीति से समाधान हुआ है तथा उपन्यास में प्रगतिशील तत्त्वों का समन्वय हुआ है। 'पडघवली' उपन्यास में मुख्य पात्र अंबू के पडघवली छोडकर न जाने के निर्णय से उपन्यास का अंत तो योग्य हुआ है, परंतु वह समस्या का समाधान नहीं है। उसमें तो केवल एक आशावाद दिखाई देता है कि उध्वस्त पडघवली फिर से संप्पन्न स्वस्थ हो जाय। 'मैला आँचल' उपन्यास के

समान इस उपन्यास में प्रगतिशील तत्त्वों का समन्वय नहीं हुआ है। केवल उपन्यास का प्रतिनिधि पात्र अंबू पडघवली गांव का विकास चाहता है।

चतुर्थ अध्याय में 'मैला आँचल' और 'पडघवली' इन उपन्यासों के उच्च, मध्य और निम्न वर्ग के पात्रों का संक्षेप में चरित्र चित्रण किया है।

चरित्र चित्रण के बाद आँचलिक चरित्रों की विशेषताएँ जैसे वर्ग विभाजन के आधार पर पात्रों की विशिष्टता, प्रतिनिधि पात्रों का बाहुल्य, व्यक्तिगत गुणों का स्थान, क्षेत्रीय विशेषताओं की पात्रों में अभिव्यक्ति, उपन्यासकार के जीवनदर्शन की पात्रों में अभिव्यक्ति और पात्रों का बाह्य और अंतरिक चित्रण आदि के आधार पर 'मैला आँचल' और 'पडघवली' इन उपन्यासों के पात्रों का विवेचन किया है।

आँचलिक उपन्यासों में पात्रों की विशिष्टता वर्गविभाजन के आधारपर की जाती है। इसमें उच्च, मध्य और निम्न इन तीन वर्गों के पात्रों का चित्रण किया जाता है।

'मैला आँचल' और 'पडघवली' इन दोनों उपन्यासों में उच्च, मध्य और निम्न वर्ग के पात्रों का चित्रण हुआ है।

## प्रतिनिधि पात्रों का बाहुल्य :-

आँचलिक उपन्यासों में प्रतिनिधि पात्रों का बाहुल्य होता है। 'मैला आँचल' और 'पडघवली' इन दोनों उपन्यासों के प्रतिनिधि पात्र अंचलरूपी जीवन के किसी-न-किसी पक्ष, पहलू या प्रवृत्ति के प्रतिनिधि होते हुए भी अपनी निजी वैयक्तिकता से संबंधित हैं।

कई प्रतिनिधि पात्र व्यक्तिगत गुणों से परिपूर्ण होने के कारण अपने ही वर्ग में विशेष स्थिति बना लेते हैं।

'मैला आँचल' उपन्यास में तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद और डॉ. प्रशांत तथा पडघवली उपन्यास में अंबू और गुजाभट इन पात्रों ने अपने व्यक्तिगत गुणों से अपने ही वर्ग में विशेष स्थिति बना ली है।

आँचलिक उपन्यासों में सामान्य पात्रों को उभारकर उनके द्वारा सामाजिक जीवन की कथा कहलाने के लिए उनमें व्यक्तिगत गुणों का हल्का पुट दिया जाता है, जो उन्हें अन्य पात्रों से भिन्न कर देता है।

'मैला आँचल' उपन्यास के लछ्मीदासी में पवित्रता, बालदेव में सच्चरित्रता, कालीचरन में विद्रोह, डॉ. प्रशांत में समाजसेवा एवं देशप्रेम, ममता में प्रेम का उदात्तीकरण, विश्वनाथप्रसाद की उदारता, कमली में प्रेमचेतना तथा 'पडघवली' उपन्यास के फुफेरी सास में सेवाभाव, गुजाभट में विद्रोह, अंबू का गांव के प्रति प्रेम आदि पात्रों के व्यक्तिगत गुण इनको अन्य पात्रों से अलग कर देते हैं।

## क्षेत्रीय विशेषताओं की अभिव्यक्ति :-

आँचलिक उपन्यासों में पात्र विकसित हो या अविकसित उनकी अवतारणा क्षेत्रीय विशेषताओं को अभिव्यक्त करने के लिए की जाती है।

'मैला आँचल' उपन्यास में जातीयता, अंधश्रद्धा, गरीबी, सांप्रदायिकता आदि को उपन्यास के पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है। उसी प्रकार 'पडघवली' उपन्यास में अंधश्रद्धा, जातीयता को उपन्यास के पात्रोंद्वारा ही उद्घाटित किया है।

## उपन्यासकार का जीवनदर्शन :-

आँचलिक उपन्यासों में उपन्यासकार का जीवनदर्शन अथवा उसकी विचारधारा पात्रोंद्वारा स्वत: प्रकट हो जाती है। प्रगतिशील उपन्यासकार आँचलिक और अनांचलिक पात्रोंद्वारा उपन्यास में प्रगतिशील तत्त्वों का समन्वय कर देते हैं।

'मैला आँचल'उपन्यास में बालदेव और कालीचरन इन प्रगतिशील आँचलिक और डॉ.प्रशांत, ममता इन प्रगतिशील अनांचलिक पात्रोंद्वारा रेणु का देशप्रेम, स्वतंत्रता आंदोलनों में उन्होंने निभायी हुई भूमिका, उससे संबंधित उनके विचार चित्रित हुए हैं।

'पडघवली' उपन्यास में प्रमुख आँचलिक पात्र अंबू का पडघवली प्रेम और पडघवली की उध्वस्त स्थिति देख उसकी अस्वस्थता मानसिक घुटन स्वयं दांडेकर का ही अपने गांव के प्रति प्रेम और अपने गांव की उध्वस्तता देख उनके मन की हुई अस्वस्थता चित्रित हुई है।

आँचलिक उपन्यासों में पात्रों के बहिरंग और अंतरंग चित्रण को भी महत्त्व होता है।

'मैला आँचल' और 'पडघवली' इन दोनों उपन्यासों में कुछ पात्रों का बहिरंग चित्रण तो हुआ है परंतु लेखकोंने पात्रों की आत्मा को गढने का प्रयास किया है इस कारण दोनों उपन्यासों के पात्रों का बहिरंग की अपेक्षा अंतरंग चित्रण बहुत ही सूक्ष्म और प्रभावी रूप से हुआ है।

'मैला आँचल' उपन्यास सामाजिक होते हुए भी उसे राजनीति का पुट है। उपन्यास का हर पात्र किसी न किसी रूप में राजनीति से जुडा है तथा बहुतसे पात्रों का उद्देश्य समाजसेवा या देशसेवा करना है। जबकि 'पडघवली' उपन्यास पूर्णत: सामाजिक है। इसका राजनीति से कोई संबंध नहीं है। उपन्यास के 'अंबू' इस पात्र को छोडकर हर पात्र अपनी वैयक्तिक जिंदगी में मशगूल है। उन्हें समाजसेवा से कोई मतलब नहीं है। 'मैला आँचल' उपन्यास का प्रमुख पात्र प्रशांत भारत के मैले हुए देहातों को सुधारने के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर देता है। 'पडघवली' उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र है अंबू। वह अपने पडघवली गांव की भलाई तो चाहती है परंतु उध्वस्त हुए गांव को फिर से खडा करने में कोई ठोस कदम नहीं उठा सकती। वह केवल आशावादी है, जबकि डॉ. प्रशांत अपनी उद्देश्य पूर्ति के लिए स्वयं कार्यरत हो जाता है। 'मैला आँचल' उपन्यास के पात्र अपनी उद्देश्यपूर्वी के लिए या जीवनयापन के लिए हमेशा मेरीगंज में ही रह जाते हैं। जहाँ पडघवली उपन्यास में कई पात्र वैयक्तिक परेशानियों से आत्महत्या कर लेते हैं, कई पात्र मर जाते हैं और कई पात्र जीवनयापन के लिए पडघवली छोडकर अन्यत्र चले जाते हैं, जिससे गिने-चुने पात्रों को छोड पडघवली रिक्त हो जाती है।

इस प्रकार दोनों उपन्यासों के पात्रों में दिखाई देनेवाली भिन्नता उपन्यासों के अलग अलग विषयों के कारण आयी है। पंचम अध्याय में दोनों उपन्यासों की भाषाशैली का उद्घाटन किया है। आँचलिक उपन्यासों की भाषाशैली में हल्के-गहरे आँचलिक रूप और हल्की-गहरी भावोक्तियां होती हैं।

दोनों उपन्यासों की भाषाशैली का विवेचन आँचलिक उपन्यासों की भाषाशैली की विशेषताओं के अनुसार किया है। इसके साथ साथ दोनों उपन्यासों के संवादों का आँचलिक उपन्यासों के संवादों की विशेषताओं के अनुसार विवेचन किया है।

आँचलिक उपन्यास की भाषा मे हल्के- गहरे आँचलिक रूप और हल्की गहरी भावोक्तियां होती है।

'मैला आँचल' और 'पडघवली' दोनों उपन्यासों में आँचलिकता के हल्के-गहरे रूप शब्दों के लोकप्रचलित रूप तथा आँचलिक भाषा के शब्दों, मुहावरों तथा लोकोक्तियों के विस्तृत प्रयोग द्वारा प्राप्त किये हैं।

इस प्रयत्न में शब्दों के विकृत रूपों ने प्रभाव प्रवणता की दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखा है।

भाषा का दूसरा रूप हल्की गहरी भावोक्तियाँ होती हैं। इसमें काव्यत्व और भावत्व दोनों होते हैं।

'मैला आँचल' उपन्यास की भाषा में काव्यत्व और भावत्व के सुंदर उदाहरण प्राप्त होते हैं। परंतु 'पडघवली' उपन्यास की भाषा काव्यत्व और भावत्व के उदाहरणों से परिपूर्ण नहीं है।

दोनों उपन्यासों के संवादों में आँचलिक उपन्यासों के संवादों की समूहवार्ताशैली, स्वगत संवाद, संवादों में विविधता आदि विशेषताओं को स्थान मिला है।

'मैला आँचल' उपन्यास में इतिवृत्तात्मक, डायरी, पत्रात्मक, आत्मकथात्मक तथा रिपोर्ताज आदि शैलियों का मिला जुला प्रभावी प्रयोग हुआ है। 'पडघवली' उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखा हुआ है।

षष्ठ अध्याय 'मैला आँचल' और 'पडघवली' इन दो उपन्यासों के देश-काल- वातावरण को उद्घाटित करता है। ।

आँचलिक उपन्यासों के देश-काल-वातावरण के भौगोलिक परिवेश, सामाजिक वातावरण और प्राकृतिक वातावरण इन तत्त्वोंनुसार दोनों उपन्यासों के देश-काल-वातावरण का विवेचन किया है।

प्रदेश को अंचल बनाने में सबसे महत्त्वपूर्ण हाथ भौगोलिक परिवेश का होता है। आँचलिक उपन्यासों में अधिकतर लेखक उन जनपदों का ही जीवन प्रकाशित कर रहे हैं जिनको उन्होंने अपने भीतर से जिया है।

'मैला आँचल' उपन्यास का कथाक्षेत्र बिहार राज्य के पूर्णियाँ जिले का मेरीगंज गांव है। स्वयं रेणु का जन्म पूर्णिया जिले में हुआ था। इसीकारण उन्होंने अनुभूत किये हुए वातावरण को ही अपने उपन्यास में चित्रित किया है।

'पडघवली' उपन्यास का कथाक्षेत्र महाराष्ट्र राज्य के उत्तर कोंकण का पडघवली गांव है। स्वयं दांडेकर का यह गांव होने के कारण उनका बचपन इसी गांव में बीता है। इस कारण उनके अनुभूत किये हुए

पडघवली गांव के वातावरण का ही उपन्यास में चित्रण हुआ है।

'मैला आँचल' उपन्यास का सामाजिक वातावरण गांव की सामाजिक संरचना, राजनैतिक चैतन्य, धार्मिक विश्वास (वातावरण) के द्वारा व्यक्त हुआ है। उसी प्रकार 'पडघवली' उपन्यास का सामाजिक वातावरण गांव की सामाजिक संरचना तथा धार्मिक वातावरण के द्वारा व्यक्त हुआ है। दोनों गावों का सामाजिक वातावरण सुख-शांति, संप्पन्नता से कोसों दूर है।

प्रकृति चित्रण (प्राकृतिक वातावरण) को आँचलिक उपन्यासों में महत्त्वपूर्ण स्थान होता है।

'मैला आँचल' और 'पडघवली' दोनों उपन्यासों में उनके कथाक्षेत्र तथा उसके आसपास की भौगोलिकता चित्रित हुई है, परंतु इन्हें प्रभावी रूप का प्रकृति चित्रण नहीं कहा जा सकता। 'मैला आँचल' के उपन्यासकार का उद्देश्य प्रकृति चित्रण की अपेक्षा मेरीगंज के समाज का चित्रण करना है। तथा 'पडघवली' उपन्यास में प्रकृति की संप्पन्नता और ऱ्हास पडघवली के व्यक्ति की संप्पन्नता और ऱ्हास से समांतर रहा है। वहाँ की प्रकृति और व्यक्ति के इस एकरूपता के कारण ही उपन्यास में स्वतंत्र रूप से प्रकृति चित्रण को स्थान नहीं मिला है।

'मैला आँचल' उपन्यास का कालखंड आधुनिक है। मेरीगंज गांव के 1946 से 1948 तक के सीमित कालावधी में उपन्यास की घटनाएँ घटित हुई हैं। जहाँ 'पडघवली' उपन्यास में एक प्रदीर्घ कालखंड का चित्रण हुआ है। पडघवली की स्थापना से लेकर उसकी उध्वस्त हुई स्थिति तक का काल उपन्यास में चित्रित है। इस प्रदीर्घ काल को तीन हिस्सों में विभाजित किया है।

'मैला आँचल' एक सामाजिक उपन्यास होते हुए भी उसे राजनीति का पुट है। स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से प्रेरित भारतीय जनता का दर्शन इसमें होता है। उपन्यास के बहुत से पात्र गांधीजी से प्रभावित तथा स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय दिखाई देते हैं। 'पडघवली' उपन्यास पूर्णत: सामाजिक उपन्यास है। इसमें राजनीति को स्थान नहीं है।

सप्तम अध्याय में दोनों उपन्यासों के उद्देश्य को उद्घाटित किया है।

मनोरंजन के साथ साथ आँचलिक उपन्यास के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अंचल का समग्रता से चित्रण

और मानवतावादी दृष्टि आदि होते हैं।

आँचलिक उपन्यासों के ये महत्त्वपूर्ण उद्देश्य 'मैला आँचल' और 'पडघवली' दोनों उपन्यासों में प्राप्त होते हैं। दोनों उपन्यासकारों ने अपनी समाजसुधार तथा मानवतावादी दृष्टि को अपने उपन्यास के उद्देश्य द्वारा बडी सफलता से प्रकट किया है और उसके बारे में उन्होंने कुछ सुझाव भी दिये हैं।

आँचलिक उपन्यास का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य अंचल का समग्रता से चित्रण करना होता है।

'मैला आँचल' उपन्यास में मेरीगंज गांव के सामाजिक, प्राकृतिक, धार्मिक, आर्थिक तथा राजकीय वातावरण और 'पडघवली' उपन्यास में 'पडघवली' गांव के सामाजिक, प्राकृतिक, धार्मिक, आर्थिक वातावरण के उद्‌घाटन द्वारा अंचल का समग्र चित्रण हुआ है।

आँचलिक उपन्यास का एक और उद्देश्य मानवतावादी दृष्टि भी होता है।

'मैला आँचल' उपन्यास के उद्देश्य का संबंध केवल मानवता से है। विज्ञान के वरदान से विध्वंसात्मक और निर्माणात्मक असीम शक्तियों से संप्पन्न आधुनिक मानव का प्रगति की इस अंध दौड में पडकर सारे मानवीय मूल्यों का ऱ्हास हो मानव हताश और विवश हो गया है। आज के इस भौतिकवादी युग में मानव के दिल में वास करनेवाला देवता याने मानवता नष्ट हो गयी है। आदमी जानवर बन गया है। तब सबसे महत्त्वपूर्ण काम है जानवर को फिर से इन्सान बनाना। इस महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र डॉ. प्रशांत अपनी विदेशी छात्रवृत्ति त्याग अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर हमेशा के लिए अंचलवासी हो जाता है। इस प्रकार डॉ. प्रशांत के द्वारा मानवतावाद का व्यापक और आशावादी स्वर मुखरित हुआ है।

'पडघवली'उपन्यास का उद्देश्य भी व्यापक है। शहरों में बढते कारखानों और उद्योगधंदों के कारण भारत के देहातों के नवसर्जनशील मनुष्यशक्ति का शहरों में हो रहा विलिनीकरण और उसके कारण देहातों का हो रहा ऱ्हास इसकी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए देहातों के पुर्ननिर्माण की आवश्यकता पर जोर दिया है। इसके साथ मानवी जीवन के अनेक पहलुओं का उद्‌घाटन करते हुए उससे जुडे अनेक सवालों के उत्तर ढूंढने तथा उन पर विचार करने के लिए पाठकों को मजबूर किया है। इसमें उन्हें बहुत ही सफलता मिली है। उपन्यासकार ने उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू के व्यक्तित्व, उसके चिंतन, मानसिकता तथा उसके कार्यद्वारा अपने उद्देश्य को प्रदर्शित किया है।

'मैला आँचल'उपन्यास के उद्देश्य का संबंध मानव, मानव की प्रगति और विकास की कामना और मानवी मूल्यों की स्थापना का संकल्प आदि से है। 'पडघवली' उपन्यास का उद्देश्य भी मानव के विकास की कामना करता है। परंतु पडघवली उपन्यास में मानव जीवन के पहलुओं का उद्घाटन करना उपन्यासकार का प्रमुख उद्देश्य है जिससे उपन्यासकार ने मानवी जीवन के अनेक पहलू, रिश्तों की गहराई, मानव की सामर्थ्य आदि बातों का उद्घाटन करने का बहुत ही सफल प्रयास किया है। इस उद्देश्य के सामने शहरों में हो रहा देहातों के नवसर्जनशील मनुष्य शक्ति का विलिनीकरण और उससे देहातों का हो रहा ऱ्हास यह बात दुय्यम स्थान पाती है। यहाँ मानव का सर्वांगीण विकास तथा उसकी प्रगति यह बात दुय्यम स्थान पर है।

## अनुसंधान की उपलब्धियाँ :-

अनुसंधान के प्रारंभ में जो प्रश्न मेरे सामने थे उन प्रश्नों को मैंने प्रस्तावना में दिया है। अनुसंधान के बाद इन प्रश्नों के उत्तर जो मुझे प्राप्त हुए हैं वे इस प्रकार हैं।

(1) आँचलिक तत्त्वों की दृष्टि से क्या दोनों उपन्यास सफल हैं ?

आँचलिक तत्त्वों की दृष्टि से 'मैला आँचल' और 'पडघवली' दोनों सफल उपन्यास हैं। परंतु उन्हें पूर्णत: सफल भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि दोनों उपन्यासों में आँचलिक उपन्यास के महत्त्वपूर्ण तत्त्व प्रकृति चित्रण को विशेष स्थान नहीं मिला है। दोनों उपन्यासों में अपने अपने कथाक्षेत्र तथा उसके आसपास की भौगोलिकता चित्रित हुई है, परंतु उसे प्रभावी प्रकृति चित्रण नहीं कहा जा सकता जो एक आँचलिक उपन्यास में अपेक्षित होता है।

(2) इन दो उपन्यासों की समानताएं कौन-सी हैं ?

'मैला आँचल'और 'पडघवली' दोनों उपन्यासों में अंचल का समग्र चित्रण अत्यंत प्रभावी हुआ है।

दोनों उपन्यासों में लोकगीतों को विशेष महत्त्व मिला है।

दोनों उपन्यासों में उपन्यासकारों का देशप्रेम व्यक्त हुआ है। दोनों उपन्यासों के लेखक भारत के देहातों का सर्वांगीण विकास चाहते हैं।

'मैला आँचल' उपन्यास के लेखक अपने उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र डॉ. प्रशांत द्वारा भारत के पिछडे हुए देहातों की सर्वांगीण उन्नती करना तथा वहाँ के लोगों के मुरझाएं होठों पर मुस्कराहट और दिल में आशा तथा विश्वास लौटाना चाहते हैं।

'पडघवली' उपन्यास के लेखक उपन्यास के महत्त्वपूर्ण पात्र अंबू के द्वारा यह इच्छा प्रदर्शित करते हैं कि शहरों में बढते कारखानों और उद्योगों के कारण भारत के देहातों की नवसर्जनशील मनुष्यशक्ति का शहरों में विलिनीकरण हो रहा है। इस कारण भारत के देहात उजाड हो रहे हैं। इस भीषण स्थिति का अंत हो, शहरों की तरफ मुडे लोग फिर से अपने उध्वस्त हुए गावों की तरफ लौटे। अपने गावों को फिर से खडा करने और संप्पन्न बनाने के प्रयास में जुट जायें।

दोनों उपन्यासों में प्रकृति चित्रण प्रभावी नहीं हुआ है।

(3) इन उपन्यासों की अपनी अपनी विशेषताएँ कौन-सी हैं ?

'मैला आँचल' उपन्यास एक सामाजिक उपन्यास होते हुए भी उसे राजनीति का पुट है। उपन्यास के बहुत से पात्र किसी-न-किसी रूप में राजनीति से संबंधित है। वे स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से प्रेरित तथा देशप्रेम की भावना से ओतप्रोत है।

'पडघवली' उपन्यास पूर्णत: सामाजिक उपन्यास है। उपन्यास का राजनीति से कोई संबंध नहीं है। उपन्यास का हर पात्र अपनी वैयक्तिक जिंदगी में मशगूल है।

'मैला आँचल' उपन्यास का प्रमुख प्रतिनिधि पात्र डॉ. प्रशांत मानवतावादी भावना से प्रेरित हो अपना संपूर्ण जीवन मानवता की सेवा के लिए समर्पित कर देता है। मेरीगंज तथा उसके आसपास के देहातों की सर्वांगीण उन्नती करने के कार्य में जुट जाता है।

'पडघवली' उपन्यास की प्रमुख प्रतिनिधि पात्र अंबू में भी मानवतावादी भावना है। वह अपने गांव की भलाई तो चाहती है, परंतु उध्वस्त हुए पडघवली को फिर से खडा करने में कोई ठोस कदम नहीं उठा सकती वह केवल आशावादी है जबकि डॉ. प्रशांत अपनी उद्देश्यपूर्ती के लिए स्वयं कार्यरत हो जाता है।

इस प्रकार 'मैला आँचल' उपन्यास में उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयास किया जाता है, जहाँ

'पडघवली' उपन्यास से केवल आशावाद प्रकट होता है।

(4) इन उपन्यासों के उद्देश्य क्या हैं ?

'मैला आँचल' कृति के पीछे लेखक का उद्देश्य बडा व्यापक है जिसका संबंध केवल मानवता से है। विज्ञान के वरदान से विध्वंसात्मक और निर्माणात्मक असीम शक्तियों से संप्पन्न आधुनिक मानव का प्रगति की इस अंध-दौड में पडकर सारे मानवीय मूल्यों का ऱ्हास हो रहा है। मानवी जीवन समस्याओं से ग्रस्त हो गया है। मानव हताश और विवश हो गया है। आज के इस भौतिकवादी युग में मानव के अंदर की मानवता नष्ट हो गयी है। आदमी जानवर बन गया है। अब सबसे महत्त्वपूर्ण काम है जानवर को फिर से इन्सास बनाना। इस महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उपन्यास का महत्त्वपूर्ण पात्र डॉ. प्रशांत अपनी विदेशी छात्रवृत्ति त्याग अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर देता है।

इस प्रकार उपन्यासकार ने डॉ. प्रशांत के द्वारा मानवतावाद का व्यापक और आशावादी स्वर मुखरित किया है।

'पडघवली' उपन्यास का उद्देश्य भी व्यापक है। शहरों में बढते कारखानों और उद्योगधंदों के कारण भारत के देहातों के नवसर्जनशील मनुष्यशक्ति का शहरों में हो रहा विलिनीकरण और उसके कारण देहातों का हो रहा ऱ्हास इसकी ओर ध्यान आकर्षित करते हुए देहातों के पुर्ननिर्माण की आवश्यकता पर जोर दिया है। इसके साथ उन्होंने मानवी जीवन और उससे जुडे अनेक सवालों के उत्तर ढूंढने तथा उनपर विचार करने के लिए पाठकों को मजबूर किया है। इसमें लेखक को बहुत ही सफलता मिली है। मानवी जीवन, रिश्तों की गहराई, उसके उतार चढाव, मानव की सामर्थ्य, उसकी जिद्द, मानव और उसके परिवेश के बीच निर्माण होनेवाले पारस्पारिक संबंध आदि बातों का उद्घाटन बहुत ही सफलता से किया है। इस उद्देश्य के सामने शहरों में हो रहा देहातों का विलिनीकरण और उससे देहातों का हो रहा ऱ्हास यह बात दुय्यम स्थान पाती है।

## अनुसंधान की नई दिशा :-

''आँचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' और 'पडघवली' के चरित्र चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन।''

****